प्रश्नक :- शाखा ओ शाखाक शीर्षक स्पष्ट करैत सारांश लिखू ।

उत्तर :- डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म रचित शाखा ओ शाखा, ई वीर रसक सफल अभिव्यक्ति भेल अछि । चौदहम शताब्दीक मिथिलाक स्थिति उद्गार तेकर क्रिया-कलापक उल्लेख भेल अछि । गद्य - शैलियारीक आंगनमे सामन्त लोकनिक संग महाराज शिवसिंह बैसल छथि । हुनक मंत्री अभिनकर सूचित करैत छथिन्ह जे सेनापति मेधा साथ जोड़की गंगाक संगम पर कोनहरामे ठहरल छथि । सेनापति श्रीमन्त उदयंकरक देहावसान आ गोनलि शाहक निशाफल फौज कें मिथिलाक सेना छिन्न-भिन्न कए देलक । तखन ज्ञान तिलकेश्वर युद्धक विजेता श्रीमन्त केदारकर सेहो आबि गेलाह । हुनका संगे युद्धकवि विद्यापति सेहो चेल छलाह । महाराज शिवसिंह प्रसन्न भए बेरि - बेरि कवि आ केदारकर कें अपन छाती सँ लगा लैत छथि । विद्यापति अपन जीवनकें संकट मे राखि कए युद्धमे गेल छलाह । शिवसिंह हर्षातिरेक मे स्वीकार करैत छथि । जे आइ मिथिलाक मन्दिर आ धर्मपुस्तक अछि आ मिथिलाक स्वाधीनता सुरक्षित अछि जे हमर सौभाग्य अछि जे अपन युगक सर्वश्रेष्ठ कवि आ नरपुंगवक स्नेह आ सहयोग प्राप्त अछि । हुनक दादाजी कें पूर्वाभास छल जे मिथिलाक निकट भविष्य मे अग्नि-स्नान करए पड़तैक ।

विद्यापति शाखाक - विषय मे मिथिलाक नव शक्ति प्रतीक कहैत छथि । केदारक मत छन्हि विजय सौभाग्य मिथिलाक प्राचीन विजय थिक । एहि अनुपम अवसर पर कवि अपन कहैत एकक संग एकटा कविता सुना कवि मृदंगक स्वर मे नहाइ उठलाह ।

विद्यापति अपन स्वर मे कहैत छथि जे ज्योतिरीश्वर आ हम के मिथिलाक लेल मे देववाणीक रक्षा हेतु सदा आगाँ रहलहुँ अछि देववाणीक प्रयोग विद्युत-पिक — विद्यापतिक छहि पद्य जे कीर्तिलता मे उद्धृत अछि।

बालचन्द्र विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेश्वर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ

बालचन्द्र शंख नाद शंकर क आराधना करैत छथि। उपस्थित समुदाय विद्यापति जयजयकार करैत अछि। विद्यापति अपन उदारतामक परिचय दैत केशरकर सँ कहैत छथि शास्त्रार्थ-मंडप मे प्रतिपक्षी पण्डितक वध उचित नहि आ मुखार्क छाक क्षमादान करबाक परामर्श दैत छथि। विद्यापति अपन रक्षाकर्तिहारक केशरकर कें अंग मे भरि लैत छथि। चारू कात जयध्वनि आ शंख नाद क संगीत अछि।

NOKIA

Scanned with CamScanner